सुरेशचन्द्र शुक्ल शरद आलोक जी से साक्षात्कार

डॉ. रेखा.जी
सहायक प्राध्यापक
लॉयला कॉलेज (ऑटोनोमस)
चेन्नई –600034
ई मेल –sagarrekhasps1984@gmail.Com
Whatsapp -9445600456

प्रश्न.1 सर, प्रवासी साहित्य की कौन सी विशेषताएँ रही हैं?

उत्तर– प्रवासी साहित्य वह साहित्य है जिसे प्रवासी लिखते हैं । प्रवासी साहित्य की अपनी विशेषता है । अन्य विमर्शों की तरह प्रवासी साहित्य भी भारतीय भाषाओं के साहित्य में स्थान बनाने में सफल हो रहा है।जैसे नए विमर्शों में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, किसान विमर्श आदि ने अपना एक स्थान बनाया और समय के साथ–साथ यह प्रासंगिक और प्रायोगिक बन गया ।

1. पहली तरह के प्रवासी वे हैं जो फिजी, मॉरीशस, त्रिनिडाड, गुआना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में गये या ले जाए गए । वे लोग गिरमिटिया, श्रमिक अथवा कृषक बनकर अनेक देशों में गये और वही बस गये। वे अनेक पीढ़ियों से वहाँ रह रहे हैं और कुछ वर्षों में या अवकाश प्राप्त करने के बाद वापस देश लौट आये ।

2. दूसरे तरह के लोग जो श्रमिक–कारीगर के रूप में विदेशों में काम करने गये।जैसे मध्य पूर्व एशिया आदि में कुछ वर्षों तक काम करने के बाद या अवकाश प्राप्त करने के बाद स्वदेश लौट आये ।

3. तीसरे वे जो अपना जीवन बेहतर बनाने हेतु पढ़ने के लिए गए व काम करने गए और फिर वही बस गये ।

मुझे इसी तीसरी श्रेणी में रखा जा सकता है । मेरा मानना है प्रवासी साहित्य को किसी एक मानदण्ड में नहीं ढाला जा सकता । प्रवासी साहित्य व्यापक है । कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि 'रचना अपने मानदंड को खुद तय करती है। प्रवासी रचनाओं के भी मानदंड तय होंगे ।

प्रश्न 2. सर, साहित्य सृजन में आपकी रुचि कैसे उत्पन्न हुई? किस साहित्यकार से आपको लिखने की प्रेरणा मिली?

उत्तर– बचपन में मेरे आसपास के वातावरण ने मुझे साहित्य से जोड़ा । शुरुआत घर से हुई । घर पर पिताजी रेडियो सुनते थे, रोज अखबार पढ़ते और अपने पास बैठाकर मुझसे भी अखबार पढ़वाते थे । उस समय आकाशवाणी में देहाती रेडियो पर रमई काका की हास्य–व्यंग्य नाटिका लोक भाषा अवधी में प्रस्तुत की जाती थी और रात में हवामहल कार्यक्रम में एक एकांकी प्रस्तुत की जाती थी । जिसका प्रसारण शायद रात पौने नौ बजे रेडियो पर होता था । दोनों कार्यक्रम रोचक होते थे । माँ रोज रामायण पढ़ती थीं और मुझे भी पढ़ने के लिए प्रेरित करती थीं । अतः माँ की आज्ञा मानकर मैं प्रायः रामायण पढ़ने लगा । इसके साथ नगर महापालिका पाठशाला ऐशबाग लखनऊ से मैंने पाँचवी कक्षा की शिक्षा प्राप्त की थी, जहाँ हमारे अध्यापक अंत्याक्षरी की प्रतियोगिता कराते थे । इस पाठशाला में अध्यापक नन्हा महाराज और राम विलास जी का आज भी स्मरण है जो बहुत प्रोत्साहित करते थे ।

वहाँ मेरे भीतर जाने–अनजाने साहित्य के बीज पड़ गए थे । सन् 1969 में मेरी पहली कविता प्रकाशित हुई। रामचरित मानस और पाठ्यक्रम की कविताओं और कहानियों को जब पढ़ता था तो इच्छा होती थी कि मैं भी कुछ लिखूँ। लखनऊ नगर के उस समय के प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'स्वतन्त्र भारत' और 'आज' पढ़कर समाज की बहुत जानकारी मिलने लगी। जिसमें हर सप्ताह साहित्य का परिशिष्ट होता था । अखबार पढ़कर से लिखने की इच्छा और प्रबल हुई ।

मुझे लिखने के लिए आस–पास के समाज ने प्रेरित किया। जब अपने मोहल्ले के कार्यक्रम में मैं कोई कविता सुनाता था तो वे मेरे पिताजी श्री बृजमोहन लाल शुक्ल व माँ श्रीमती किसोरी देवी से मेरी तारीफ़ करते थे। इस तरह पिताजी मुझे प्रोत्साहित करते थे। स्वतन्त्र भारत, बोधगीत तथा श्रमांचल में मेरी कवितायें छपने लगी थीं।

प्रश्न 3. सर, आपकी पहली प्रवासी रचना क्या थी और कब प्रकाशित हुई थी?

उत्तर– सन् 1980 से ही मेरी पहली प्रवासी रचना नार्वे से प्रकाशित पहली हिन्दी पत्रिका 'परिचय' में प्रकाशित हुई थी । नार्वे में मैंने पहली कविता बर्फ पर लिखी थी जो रजनी काव्य संग्रह में घन (हिमपात के गहन) शीर्षक से प्रकाशित हुई ।

प्रश्न 4. सर, साहित्य की किस विधा में आपकी रुचि सर्वाधिक है?

उत्तर– अधिकांश लेखकों ने अपना लेखन कविता से शुरू किया था । वैसे ही मैं भी उसका अपवाद नहीं था । बहुत से लेखकों की तरह मेरी भी पहली पुस्तक कविता की प्रकाशित हुई ।

प्रश्न 5. सर, आपका रचना संसार बड़ा व्यापक है इसमें कौन सी रचना आपको प्रिय लगी?

उत्तर– मुझे लगता है आम तौर पर अधिकाँश लेखकों को अपनी सभी रचनायें कमोवेश पसंद आते हैं । पाठकों द्वारा जो मेरे काव्य संग्रह अधिक पसंद किये गए हैं उनमें रजनी, नंगे पांवों का सुख, नीड में फंसे पंख, गंगा से ग्लोमा तक और लॉकडाउन है ।

मेरे काव्य संग्रह 'गंगा से ग्लोमा तक' को मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी से अखिल भारतीय भवानी प्रसाद मिश्र काव्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । सच पूछिये मुझे अपनी रचनायें बहुत पसंद नहीं हैं । मुझे लगता है मैंने अभी तक अच्छा साहित्य नहीं लिखा है, हो सकता है कि आने वाले समय की प्रतीक्षा कर रहा हूँ । जब मेरे हाथों अच्छे साहित्य का सृजन होगा क्योंकि मुझे लगता है कि मैंने अभी तक उत्कृष्ट साहित्य सृजन नहीं लिखा है ।

प्रश्न 6. सर, आप अपनी रचनाओं में विषय–वस्तु कैसे चुनते हैं?

उत्तर– अपनी रचनाओं में मैं विषय वस्तु कैसे चुनता हूँ? उसका उत्तर देने के पहले उस समाज और देश के बारे में कुछ आधारभूत महत्वपूर्ण सूचनायें साझा करना चाहता हूँ क्योंकि इनका मेरी रचना प्रक्रिया में असर पड़ा है। भारतीय संस्कृति के इतिहास को लिखने का मुख्य कार्य विद्वान कवियों ने किया है।वैदिक युग का सांस्कृतिक रूप रेखा ऋगवेद में सुरक्षित है। समय–समय पर सैकड़ों वर्षों से हमारे देश भारत में विदेशियों का आगमन होता रहा।वे कभी पर्यटन, शिक्षा प्राप्त करने, व्यापार करने आये और यही अच्छा लगने पर बस गया। विदेश से आये लोग अपने साथ स्थापत्यकला, भाषा और उद्योगिक उन्नति में सहयोगी बने। यहाँ की संस्कृति को विभिन्न संस्कृतियों से धनी और रंग–बिरंगा बना दिया। भारत में विविधता और अनेकता में एकता का उदाहरण विश्व के लिए एक उदाहरण है ।

मैं दक्षिण एशिया के खूबसूरत देश और भारत के बाद दूसरे महाद्वीप यूरोप के सबसे उत्तर में बसे देश नार्वे में आकर बस गया। मूल देश भारत और नए बसे देश नार्वे में संस्कृति, सभ्यता और कौशल विकास आदि को लेकर बहुत बड़ा अंतर है। मुझे 26 वर्ष भारत को देखने और रहने का अवसर मिला और 1980 से ओस्लो, नार्वे में निवास कर रहा हूँ। अतः मुझे देश देखने का अनुभव हुआ और विदेश देखने का भी। मुझे दोनों देशों में शिक्षा प्राप्त करने और लेखन करने का अवसर भी मिला। मेरी रचना

प्रक्रिया में मेरे आस–पास के वातावरण में होने वाली घटनाओं का बहुत असर पड़ा।स्वदेश भारत में यदि कोई अच्छी घटना घटती तो बहुत प्रसन्नता होती और यदि कोई ख़राब घटना और दुर्घटना घटती तो दुःख होता। यहाँ से प्रभावित होती है मेरी रचना प्रक्रिया। मैं भारत को घर और बाहर दोनों दृष्टिकोण से देखता हूँ। उसी तरह नार्वे को भी भारतीय और नार्वेजीय दोनों दृष्टिकोण से देखता हूँ। लेखों और कहानियों में तत्कालीन और स्थायी प्रतिक्रिया स्वरूप विषय यथार्थ मेरे अनुभवों, कल्पनाओं में विचरण करते हुए एक विधा में (कविता, लेख और कहानी में) सृजित हो जाते। अनायास आये विचार भी कवितायें बनकर आईं न जाने कब आसमान के तारों की टिमटिमाहट, प्रकृति के सौंदर्य, मानवीय सरोकारों से प्रभावित होकर कब कोई विचार मन में आता और रचना का जन्म हो जाता ।

प्रश्न 7. सर, आपके प्रवासी साहित्य के पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े होते हैं, इसका क्या राज़ है?

उत्तर– जैसा जीवन हम जीते हैं और जिस वातावरण और समाज में रहते हैं उसका हमारे ऊपर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । सभी जो सामने घट रहा होता है । वह हम देखते हैं । पर जब मेरे जैसे व्यक्ति कुछ विशेष देखते हैं तो उसका प्रभाव मन में महसूस करते हैं । वहीं रचनाकार उसे लिख देता है । कलाकार उसकी पेंटिंग बनाता है। मूर्तिकार अपनी मनचाही मूर्ति में वह भाव भर देता है। कहानी लिखने के पहले मैं उस देश समाज,भूगोल की जानकारी और वर्तमान स्थिति को पढ़कर व वहाँ के लोगों से बातचीत करके सत्य की खोज का प्रयास करता हूँ। मेरी रचनाओं में पात्र पूरे वास्तविक नहीं होते पर पात्र वास्तविकता के करीब होते हैं। श्रोतों की जाँच के बिना भावना में बहकर शुरू में प्रेम कवितायें सभी लिखते हैं। पर मैं अब भावना में बहकर नहीं लिखता और अपना होने पर भी उसका पक्ष नहीं लेता बेशक कहीं मेरा उस पात्र के प्रति लगाव प्रकट भी हो जाता है पर उसे आवश्यकता से अधिक छूट नहीं देता वरना वह यथार्थ से दूर हो जायेगा। इस वास्तविकता को लिखते हुए यह ध्यान रहता है इसका प्रभाव उन्माद फैलाने, किसी की भावना को भड़काने या उकसाने में अपने पात्रों को छूट नहीं देता। रचनाकार सेतु निर्माता होता है। मैं रचना में केवल परिवर्तित कर देता हूँ ।जैसा मैंने देखा, सुना और अनुभव किया। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। अनेक बार ऐसा होता है कि कोई दो पल के लिए आपके सामने आता है और सामने से गुजर जाता है। आप उसे धन्यवाद या आह और ओह नहीं कह पाते क्योंकि आप बाद में उसे महसूस करते हैं। जबकि पल भर का संपदन आपके मस्तिष्क में कभी–कभी बहुत समय तक रहता है। यह प्रकृति के दृश्य को भी देखकर हो सकता है। हम उस सुंदरता,आकर्षण और मुग्धता को अस्वीकार नहीं कर पाते। एक कविता में मैंने लिखा है।

'सौंदर्य को देखकर उसको नकारना
जैसे मंदिर में जाकर दीप न जलाना।'

लॉकडाउन काव्यसंग्रह में एक बालक अपनी मरी हुई माँ को जगाता है,

'भूख से प्लेटफार्म पर, मरी हुए माँ को
दो साल का बालक जगा रहा।
उसे लगा सरकार भी उसे,
माँ की तरह छोड़कर चली गयी।'

यह एक शब्द चित्र जिसमें बहुत ज्यादा श्लेष अलंकार की जरुरत नहीं पड़ी और पाठक को पूरी कविता पढ़ने से समझ में आ जाता है कि कब और कहाँ का दृश्य है। वास्तविकता मानवता के प्रति अधिक जिम्मेदारी से जब रचना में दिखती है तो विश्वसनीयता के साथ दूरगामी प्रभाव भी डालती है। शायद यही कारण है मेरी अधिकाँश कहानियों को पाठक एक बार पढ़ने के बाद उसका कोई न को अंश पाठक के मस्तिष्क में हमेशा के लिए एक छोटा सा स्थान बना लेता है। मेरा मानना है लेखक को

अपने प्रति ईमानदार होना चाहिए यह यथार्थ से ही संभव है।रचनाओं में वास्तविकता के साथ–साथ व्यंग्य, कला और नाटकीयता भी प्रभाव डालती है मेरी दृष्टि से यह जरुरी है।

प्रश्न 8. सर, आपकी प्रवासी हिंदी रचनाओं में भारतीयता झलकती है, इसका क्या राज़ है?

उत्तर– मेरी रचनाओं में भारतीयता झलकना स्वाभाविक है। मेरे अंदर भारतीयता भरी है क्योंकि पहला कारण कि मैंने 26 वर्ष भारत में व्यतीत किये हैं। लखनऊ में रहते हुए भारतीयता के साथ भाषाई तहजीब गंगा–जमुना है। जिसमें हिन्दी, अवधी और उर्दू का संगम है,जहाँ गालियों का स्थान नहीं है। लड़ते समय भी लखनऊ में लोक किसी को आप कहकर सम्बोधित करते हैं। चाहे किसे से विवाद क्यों न हो गया हो । मैं आजीवन नार्वे में रहूँ तो भी नार्वेजीय हो नहीं सकता और भारतीयता छोड़ नहीं सकता । मुझे भारत और नार्वे दोनों से प्यार है । भारत मेरे लिए देवकी माँ की तरह है और नार्वे यशोदा माँ की तरह है । भारतीयता होने का एक कारण यह भी है कि मैंने अपने नार्वे के प्रवास में 41 वर्षों में से 40 वर्ष नार्वे में रहकर हिन्दी और नार्वेजीय भाषा की पत्रिका का सम्पादन किया है । इस कारण दिन रात भारत मेरे अंदर रहता है ।

प्रश्न 9. सर, आपकी रचनाओं के पात्रों में सबसे प्रिय पात्र कौन सा है? क्यों?

उत्तर– मुझे लगता है कि मेरे पात्रों में अनेक कहानियों में नारी पात्र मुखर हुई है।चाहे मिट्टी के खिलौने की पात्र उर्मिला हो, विषमतायें की महुआ, अधूरा सफर की शबाना, पुण्यांकन का जमील, आसमान छोटा है की कारी, दुनिया छोटी है कि टीना, लाहौर छूटा अब दिल्ली न छूटे की दादी कौशल्या,आदर्श एक ढिंढोरा का गोपाल और वापसी का राम शरण सभी पात्र मुझे प्रिय हैं क्योंकि ये अभी भी मेरे मस्तिष्क में बसे हुए हैं। अतः एक पात्र दूसरे पात्र से अलग भी है और जुड़ा भी है। कभी लगता है कि एक पात्र अलग–अलग पात्रों के रूप में मेरा पीछा कर रहा है और नयी रचनाओं में आने की मानो जिद कर रहा है। कौन–सा पात्र ज्यादा प्रिय है यह कहना मुश्किल है। अतः जिनका मैंने यहाँ कहानियों में जिक्र किया है ये सभी पात्र किसी न किसी रूप में मेरे प्रिय पात्र हैं।

प्रश्न 10. सर, आपकी रचना प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले मूल तत्व क्या हैं?

उत्तर– मेरी रचनाओं के सृजन में पहले से निर्धारित कोई निश्चित तत्व नहीं होता । व्यक्ति और समाज में लेखक को संघर्ष और सृजन करते हुए रचनाओं में अनेक तत्वों का समावेश होता चला जाता है विषय और काल के अनुसार । मेरी रचना प्रक्रिया के केंद्र में व्यक्ति और समाज रहता है । अतः व्यक्ति और समाज को प्रभावित करने वाले सारे तत्व हैं जो हमारे जीवन पद्धति, राजनीति, समाज और देश के खंडकाल में विराजमान हैं, मेरी रचनाओं में देखे जा सकते हैं ।

प्रश्न 11. सर, आपकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के विविध आयामों में सामाजिक आयामों पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर– प्रवासी जीवन के वही आयाम हैं जो मानवीय जीवन के आयाम हैं । नये देश में बसने से भौगोलिक दूरी और सांस्कृतिक भिन्नता का होना जुड़ जाता है । मैं जहाँ रहता हूँ वहाँ सौ देशों के लोग रहते हैं । जबकि मेरी मातृभूमि यथार्थ स्वदेश में भी भिन्नता है । स्वदेश में सामंजस्य के सामूहिक प्रयास नहीं किये गए और सभी को उसमें नहीं जोड़ा जा सका।इसीलिए कोविड–19 महामारी के समय में स्वदेश की जनता को जोड़ा नहीं जा सका क्योंकि राजनैतिक एकता और समंजस्यता का अभाव रहा।इसी महामारी के समय में 56 लाख की आबादी वाला देश नार्वे हमेशा की तरह पूरी दुनिया में अपने मालवाहक जहाजों से सामान ढोता रहा। दुनिया में सबसे ज्यादा युवकों की आबादी वाले देश भारत में युवाओं को इस महामारी और लॉकडाउन में कौशल विकास न सिखाया जा सका जो मेरी दृष्टि में सबसे बेहतर मौका था। पर प्रशासन और राजनैतिज्ञों की अनुभव की कमी के कारण इन्तजार करते रहे। अतः सामूहिक रूप से सभी को प्रयासों में जोड़ा नहीं जा सका, यह मेरा आकलन है, हो सकता है मैं गलत होऊँ ।

आगामी समय में आज लिखे जा रहे यथार्थ और सामयिक प्रवासी साहित्य के आयामों का मूल्यांकन हो सकेगा। हमारे साहित्य में इस कोरोना काल या आपातकाल में कैसे उपाय किये जायें उपलब्ध नहीं था और हम अनभिज्ञ रहे। जिन देशों में सरकारी स्वास्थ व्यवस्था और आपातकाल के समय में प्रबंधन को उनके और दूसरों के अनुभवों को अपने देश की स्थिति और व्यवस्था के साथ जोड़कर प्रयास किये गए वे सफल रहे और उन्हें आर्थिक घाटा का भी उतना नहीं हुआ जितना भारत और गरीब देशों में । मेरे साहित्य में इसका वर्णन है ।

प्रवासी साहित्य के द्वारा हम जानेंगे कि कैसे महामारी के समय में हमारे प्रयास हो सकते थे।नार्वे को सौ साल पहले महामारी से जो अनुभव हुआ उससे यहाँ सभी को कौशल विकास, स्वैक्षिक श्रमदान और सामूहिक जिम्मेदारी और ईमानदार को कड़े परिश्रम को जोड़ा गया। नार्वे में आज भी बालवाड़ी (किंडरगार्डन), स्कूल और कॉलेज में शिक्षा में कौशल विकास,अपने देश के मौसम, प्राकृतिक साधन का संरक्षण करना और उपयोग करना सिखाया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रतिकूल मौसम, विपरीत परिस्थिति में अपने व्यवसाय को आनन्द से कैसे जोड़ा यह मेरे प्रवासी साहित्य में जान सकते हैं।यह कोई थ्योरी नहीं है संघर्ष के साथ सामूहिक प्रयास है जिसमें सभी को समान रूप से जुड़ना होता है ।

प्रश्न 12. सर, आपकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के विविध आयामों में आर्थिक आयामों पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर– जीवन के विविध आयामों में आर्थिक आयामों का बहुत बड़ा योगदान होता है अतः मैंने अपनी रचनाओं में मैंने निम्नलिखित सवाल उठाये हैं और कहीं न कहीं वर्णन भी किया है जो निम्नलिखित हैं । इन सभी का सम्बन्ध आर्थिक आयामों से है, प्रवासी साहित्यकार जहाँ रहता है उसका प्रभाव पड़ता है, सभी गाँवों में स्कूल, सभी के लिए सामान शिक्षा और ऐच्छिक श्रमदान के अवसर होने चाहिए। हर गाँव में स्कूल, बाजार और धार्मिक स्थल एक निश्चित स्थान पर होने चाहिए। असमानता,अन्याय और अपराध के लिए शुन्य जगह होनी चाहिए। राष्ट्र की सम्पति और प्राकृतिक साधन हमेशा राष्ट्र के पास होना चाहिए। हर क्षेत्र में संगठित होने चहिए ।

प्रश्न 13. सर, आपकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के विविध आयामों में राजनैतिक आयामों पर आपके क्या विचार हैं ?

उत्तर– देश में प्रजातंत्र व्यवस्था में राजनीति की शिक्षा और दैनिक जीवन में प्रयोग को बालवाड़ी, स्कूल कॉलेज से पूरी तरह जोड़ना चाहिए । मैं पहले भी कह चुका हूँ कि असमानता, अन्याय और अपराध के लिए शून्य जगह होनी चाहिये । राष्ट्र की सम्पति और प्राकृतिक साधन हमेशा राष्ट्र के पास होना चाहिए। हर क्षेत्र में सभी को अनिवार्य रूप से संगठित होना चाहिये। समाज और देश को आर्थिक फायदा होने पर सभी नागरिकों को उसका फायदा होना चाहिए, राष्ट्र की संपत्ति बढ़ती है। जो आपातकाल और देश की बेहतरी में अकाम आ सके।आर्थिक असमानता नहीं बढ़नी चाहिये ।

प्रश्न 14. सर, आपकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के विविध आयामों में धार्मिक आयामों पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर– धर्म एक निजी संस्कृति और जीवन पद्यति से जुड़ा होता है । मैंने रामचरितमानस से रामजन्म और गुरुवंदना का नार्वेजीय भाषा में अनुवाद किया है । इसी के साथ हनुमान चालीसा का भी नार्वेजीय भाषा में अनुवाद किया है । गुरु ग्रंथ साहेब के कुछ शब्दों का अनुवाद भी किया है । कबीरदास, रैदास, सूरदास के पदों का भी अनुवाद हिन्दी से नार्वेजीय भाषा में किया है । मेरी रचनाओं में पात्र के अनुसार उसके परिवेश को व्यक्त करने के लिए कभी–कभी उसके धर्म का जिक्र आया है पर हमेशा नहीं । मदरसे के पीछे कहानी में जो अफगानिस्तान के परिशिष्ट पर लिखी गयी है।उस कहानी में धर्मान्ध और कट्टरता के बीच पात्रों के अंतर्द्वंद्व और संघर्ष की व्याख्या की गयी है।जो मेरी चर्चित कहानियों में सुमार की जाती है।जिसे मैंने 20 वर्ष पूर्व लिखा था। आपने अनेक कहानियाँ पढ़ी होंगी उसका जिक्र कर सकती हैं ।

प्रश्न 16. सर, प्रवासी हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए आपके क्या विचार हैं?

उत्तर– प्रवासी साहित्यकार जिस देश और समाज में रहता है उसे उस समाज में सर्वाधिक सक्रिय होना चाहिये। संवाद और बैठकों में सम्मिलित होने के साथ–साथ वहाँ का साहित्य, इतिहास और दर्शन पढ़ना चाहिये। प्रवासी साहित्य को सभी भाषाओं के प्रवासी साहित्य में जगह मिलनी चाहिये। प्रवासी साहित्य अपनी भाषा में है और प्रायोगिक अपनी।धार्मिक प्रवासी साहित्य को पढ़ने का मैं अनुमोदन नहीं करता। पहले से ही हम अपने–अपने धर्म और संस्कृति के प्रति जागरूक हैं। प्रवासी साहित्यकार को उस देश के साहित्य को भी अपनी भाषा में अनुवाद करना चाहिए ताकि हम अपनी भाषा में विदेशी साहित्य पढ़ सकें।तकनीकी और विज्ञान के विषयों पर तर्क और श्रोतों के अध्ययन के बाद उस पर प्रवासी साहित्यकार को रचनायें साहित्य लिखने और अनुवाद करने की बड़ी जरुरत मैं महसूस करता हूँ।

प्रश्न 17. सर, लेखन कार्य के अलावा आपकी अन्य अभिरुचियाँ क्या हैं?

उत्तर– मुझे अपनी लघु फिल्मों में अभिनय करना पसंद है इसीलिए मैंने अपनी दो टेली फिल्में तलाश (1996) और रायसेन तिल कनाडा (कनाडा की सैर–1998) तथा दिल्ली दूरदर्शन की फिल्म आठवाँ चाचा में भी सन् 1986 में अभिनय किया था । मैंने नार्वेजीय टी.वी कार्यक्रम मोची जाहिद अली की गली में भी अभिनय किया है। मैं नार्वे में सामाजिक और राजनैतिक रूप से भी काफी सक्रिय हूँ।नार्वे के लेखक समुदाय में भी मेरा उठना–बैठना है ।

प्रश्न 18. सर, उदीयमान लेखकों के लिए आप क्या सन्देश देना चाहते हैं?

उत्तर– किसी भी विचारधारा के अंधभक्त और कट्टर नहीं बनें । लोकतंत्र और राजनीतिक व्यवस्थाओं का साहित्य पढ़ें और समझें । आज आप ज्ञान के आदान–प्रदान के लिए वैश्विक मंचों से जुड़ सकते हैं । देशप्रेम और मानवतावादी बनें न की राष्ट्रवादी । पहले वैश्विक साहित्य पढ़ें और फिर भारतीय बड़े वैश्विक लेखकों को भी पढ़िए । धार्मिक साहित्य की मैं वकालत नहीं करता वह तो आप अपने घर में पढ़ सकते हैं । हम किस्मत वाले हैं कि महात्मा गाँधी भारत के थे । उन्हें पढ़ने और उसे प्रायोग में लाने से कभी आप बेरोजगार नहीं रहेंगे बल्कि आप आत्मनिर्भर बनेंगे । हर व्यक्ति को चाहे लेखक हो या कलाकार उसे कौशल विकास से जुड़ना बहुत जरूरी है । देश की समस्या को दूर करने के लिए जिस देश में रहते हैं उस देश की राजनीति से भी जुड़ना चाहिए, अध्ययन करना चाहिए ताकि आप स्वतन्त्र निर्णय और आकलन कर सकें । मेरे विचार से साहित्य लेखन और राजनीति एक सिक्के के दो पहलू होते हैं जहाँ मानवता, समानता और न्याय केंद्र में रहते हैं ।

प्रश्न 19. सर, हिंदी साहित्य के पाठकों की संख्या के विकास के लिए आप क्या सुझाव देना चाहते हैं?

उत्तर– सोशल मीडिया के कारण हिन्दी के पाठकों की संख्या बहुत बड़ी है।लेखकों की पुस्तकों के पाठकों की संख्या बढ़ने के लिए लेखकों को भी बहुत कुछ करना होगा । पुस्तकालयों तक पाठक पहुँच सकें उसके लिए पुस्तकालयों का विकास और उनकी संख्या बढ़ाने की जरुरत है।लेखक अधिक अध्ययन करें जल्दबाजी में रचनाएँ न लिखें। सामाजिक मीडिया में जो साहित्य की भरमार हैं वह सब साहित्य नहीं है। जिनकी कोई विचारधारा नहीं है उसमें परिपक्व नहीं है वह उस पर सूक्तियाँ लिख रहे हैं । सूक्तियाँ आपके तपस्या करने के बाद आपके अनुभवों से निकलती हैं । जबकि बहुत से लोग रोज सूक्तियाँ लिख रहे हैं, इससे लेखक बचे । तभी साहित्य विश्वसनीय होगा और पाठकों का आकर्षण बढ़ेगा ।

प्रश्न 20. सर, नार्वे के प्रवासी हिंदी साहित्य की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर– नार्वे में प्रवासी साहित्य नया–नया है । लेखकों ने जैसा देखा, पाया उसे लिखा है । नार्वे में प्रवासी साहित्य 1980 से लिखा जा रहा है । हालांकि यहाँ 1978 से एक भारतीय पत्रिका 'परिचय' छपना शुरू हुई थी जो हिन्दी और पंजाबी में थी। मैं भी सन् 1980 से 1985 तक इससे जुड़ा रहा पर उसमें लेख और समाचार थे,जो पहले भारतीय समाचार पत्रों में छप चुके थे। यहाँ नार्वे में लिखे जा रहे साहित्य में यहाँ के परिवेश का वर्णन मिलता है। नार्वे में प्रवासी साहित्य में अभी नास्टेल्जिया का प्रभाव है

पर यहाँ के परिवेश पर भी रचनाएं लिखी जा रही हैं। रचनाओं में स्थानीय शब्द, त्योहार, गतिविधियों के स्थानीय शब्द मिलते हैं । जो लोग नार्वेजीय भाषा में लिखते हैं उनका दायरा थोड़ा उदार है ।

मेरे प्रवासी साहित्य में यहाँ की संस्कृति, भारतीय संस्कृतिव दोनों संस्कृतियों से टकराव, द्वंद्व आदि मिलता है । भारत से प्रेम उसकी यादों से जुडी ज्यादातर रचनायें लिखी जा रही हैं । अधिकतर लोग भारत में हो रहे गतिविधियों से प्रभावित होकर लिख रहे हैं क्योंकि मेरा मानना है कि विदेश आकर व्यक्ति स्वदेश से अधिक प्यार करने लगता है ।

प्रश्न 21. सर, नार्वे में हिंदी का क्या बोल–बाला है?

उत्तर– नार्वे में जब भारतीय मिलते हैं भारतीय दूतावास, मंदिर, गुरूद्वारे या मस्जिदों में तो वह अपनी भाषा हिन्दी में बात करना पसंद करते हैं।बेशक ये लोग अलग–अलग प्रदेशों से होते हैं पर बात करने वाले भारतीय एकभाषी होते हैं तो वह उसी भाषा में बात करना पसंद करते हैं। नार्वे हिन्दी प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा है ।

प्रश्न 22. सर, नार्वे के लोग हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के प्रति किस हद तक समर्पित हैं?

उत्तर– मैं दिन रात सोते–जागते हिन्दी और भारत देश के बारे में सोचता हूँ । वहाँ की स्थितियों और समस्याओं के समाधान को ढूढ़ने के लिए यहाँ सम्बंधित विदेशी साहित्य पढ़ता हूँ । यहाँ विद्वानों पर उसकी चर्चा करके अपने विचारों को परिपक्व बनाता हूँ, श्रोतों को जानता हूँ और परखता हूँ। विदेशों में रहने वाले कुछ भारतीयों से बात करके पता चलता है कि अभी भी काफी लोग बहुत साल तक विदेश में रहने के बाद भी इंटीग्रेट नहीं हुए हैं । भारत में सम्पादकों और लेखक मित्रों से भी बातचीत करता हूँ अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए नहीं वरन उनकी राय जानने के लिए जिससे बहुत सीखने को मिलता है। मरते दम तक हिन्दी साहित्य से विलग होना संभव नहीं हैं। बेशक मैं यहाँ की भाषा का रोज दो अखबार पढता हूँ और भारत के अखबारों में दि हिन्दू पढ़ता हूँ जो अंग्रेजी का अखबार है ।

प्रश्न 23. सर, नार्वे में रहते हुए आपको अपने वतन की याद आना स्वाभाविक ही है, इस पर अपने विचार बताइए ।

उत्तर– 'वतन से दूर', हमारे स्वर्ग सा भारत, लो स्वदेश से आयी चिट्ठी, देश बदलने से आदि अनेक कवितायें रचनाएँ वतन की यादों से जुडी हैं। वापसी,अधूरा सफर और विसर्जन के पहले कहानियाँ इसका उपयुक्त उदाहरण हैं। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि चाहे मैं नार्वे में आजीवन रहूँ पर मैं अपनी भारतीयता छोड़ नहीं सकता और पूरा नार्वेजीय हो नहीं सकता ।